हविषे दीर्घसत्रस्य सा चेदानीं प्रचेतसः ।

भुजंगपिहितद्वारं पातालमधितिष्ठति ।।80।।

अन्वय सा च इदानीं दीर्घसत्रस्य प्रचेतसः हविषे भुजंगपिहितद्वारं पातालम् अधितिष्ठति।

अनुवाद और वह कामधेनु इस समय चिरकाल तक चलने वाले (यज्ञ को कर रहे) वरुण के यज्ञ में (दही, घी आदि) हविष्य की आवश्यकता पूर्ण करने के लिए सांपों के द्वारा रोके गए द्वार वाले पाताल लोक में निवास कर रही है।

टिप्पणियाँ

दीर्घसत्रस्य दीर्घम् च इदं सत्रम् दीर्घसत्रम् (कर्मधारय) दीर्घ सत्रं यस्य सः (दीर्घसत्र) (बहुव्रीहि), तस्य 'प्रचेतसः' का विशेषण है। वह वरुण जो पाताल में देर तक चलने वाला यज्ञ कर रहे हैं। विशेष रूप से ऐसा यज्ञ जो कम-से-कम 13 दिन से लेकर 100 दिनों तक की अवधि का होता है।

प्रचेतसः वरुण का।

हविषे दूध, घी आदि हविष्य के लिए, जो यज्ञ में आहुति के रूप में प्रयुक्त होता है तथा समुपस्थित लोगों के आहार में भी प्रयुक्त होता है। अर्थ यह है कि कामधेनु से दही, घी आदि हविष्य प्राप्त होते हैं जिन्हें यज्ञ में देवताओं को अर्पित किया जाता है। वरुण ने दीर्घसत्र आरम्भ किया है अतः हविष्य एवं आहारादि की दीर्घकालिक आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए कामधेनु पाताल लोक में वरुण के पास है।

पातालम् **''अधिशीङ्स्थासां कर्म''** इस नियम के कारण यहां 'अधि' उपसर्ग पूर्वक **''स्था''** धातु का 'अधितिष्ठति' प्रयोग होने के कारण **''पातालम्''** में सप्तमी के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग है। पाताल को अर्थात् पाताल में (वह पवित्र गाय) रहती है।

भुजङ्मपिहितद्वारम् भुजेन गच्छति इति भुजंगः (भुज़धातु गम्खच्) पिहितः (अपि धातु धा क्त), भुजगैः पिहितं द्वारं यस्य सः (बहुव्रीहि)। (ऐसा पाताल) जिसके द्वारों को साँपों ने बन्द कर रखा है (अर्थात् वहां जाना असम्भव है)। इससे यह भी संकेत मिलता है कि अगर राजा कामधेनु तक पहुँचना भी चाहे तो भी पाताल द्वार भयानक होने के कारण उसकी पहुंच से बाहर है। पाताल के द्वारों का साँपों द्वारा अवरुद्ध रहने का भारतीय मिथक काफी प्रचलित मिथकों में से हैं।